S. S. Jain Subodh P.G. College (Autonomous)
Jaipur

SYLLABUS

THREE YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME IN ARTS/SCIENCE/COMMERCE

Subject/Discipline: Hindi, Value Addition Course

As per NEP-2020

Value Added Courses

Scheme of Examination

Non-credit course

Total of End Sem. Exam -	50
Internal Assessment -	Nil
Maximum Marks -	50
Minimum Marks-	20

Examination Question Paper Pattern for Value Added Course

30 marks Objective/Multiple Choice/One word type questions

20 marks Project work/Assignment/ Class test/ Practical/Field work/Project report etc.

Value Addition Course – 1
सृजनात्मक लेखन के आयाम

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course Objectives) :

1. सृजनात्मकता और भाषायी कौशल का संक्षिप्त परिचय कराना।
2. विचारों का प्रभावी प्रस्तुतिकरण करना।
3. सृजनात्मक चिंतन और लेखन क्षमता को विकसित करना।
4. मीडिया लेखन की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Learning Outcomes) :

1. सृजनात्मक चिंतन और लेखन क्षमता का विकास हो सकेगा।
2. लेखन और मौखिक अभिव्यक्ति की प्रभावी क्षमता विकसित हो सकेगी।
3. मीडिया लेखन की समझ विकसित होगी।
4. विद्यार्थी में अपने परिवेश, समाज तथा राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता का विकास होगा।

पाठ्यक्रम : सृजनात्मक लेखन के आयाम

(No. of lectures)

इकाई – 1: सृजनात्मक लेखन एवं भाषिय संदर्भ

- सृजनात्मक लेखन : अर्थ, स्वरूप और बोध
- सृजनात्मक लेखन और व्यक्तित्व निर्माण — **15**
- भाव और विचार का भाषा में रूपान्तरण
- प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों की भाषा का अंतर

इकाई – 2: सृजनात्मक लेखन – विविध आयाम

- कविता, गीत, लघु कथा
- हास्य – व्यंग्य लेखन — **15**
- पल्लवन, संक्षेपण

अनिवार्य पाठ :

- लेखन एक प्रयास : हरीश चन्द्र काण्डपाल
- रचनात्मक लेखन : सं. रमेश गौतम
- साहित्य – चिंतन : रचनात्मक आयाम, रघुवंश

सुझावात्मक पाठ :

- अग्नि की उड़ान : अबुल कलाम आज़ाद
- टेलीविजन की भाषा : हरीश चन्द्र बर्णवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- छोटे पर्दे का लेखन : हरीश नवल
- काव्यभाषा : रचनात्मक सरोकार, प्रो. राजमणि शर्मा
- कविता रचना प्रक्रिया : कुमार विमल

Value Addition Course – 2
साहित्य, संस्कृति और सिनेमा

उद्देश्य (Course Objectives) :

1. साहित्य, संस्कृति और सिनेमा के माध्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास करना।
2. छात्रों को नैतिक, सांस्कृतिक और संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना।
3. भारतीय ज्ञान परंपरा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक क्षमता को प्रोत्साहित करना।
4. साहित्य, संस्कृति और सिनेमा के माध्यम से राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करना।
5. सामूहिक कार्यों के माध्यम से सम्प्रेषण, प्रस्तुतिकरण एवं कौशल दक्षता विकसित करना।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes) :

1. साहित्य, संस्कृति और सिनेमा के माध्यम से नैतिक, सांस्कृतिक और संवैधानिक मूल्यों की समझ विकसित होगी।
2. भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।
3. वैचारिक समझ एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।
4. परियोजना के माध्यम से संप्रेषण एवं प्रस्तुतिकरण दक्षता का विकास होगा।
5. छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा।

पाठ्यक्रम : साहित्य, संस्कृति और सिनेमा

(No. of lectures)

<u>इकाई – 1:</u> साहित्य, संस्कृति और सिनेमा का सामान्य परिचय एवं साहित्यिक कृतियों पर आधारित सिनेमा

- साहित्य, संस्कृति और सिनेमा : परिभाषा और स्वरूप
- साहित्य, संस्कृति और सिनेमा का अंतः संबंध — 15
- साहित्यिक कृतियों पर आधारित सिनेमा की प्रासंगिकता
- साहित्यिक कृतियों पर आधारित सिनेमा – तीसरी कसम 1966, पद्मावत 2016

<u>इकाई – 2:</u> हिन्दी सिनेमा में सामाजिक – सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति

- सामाजिक – सांस्कृतिक मूल्य के शक्तिशाली उपकरण के रूप में सिनेमा — 15
- हिन्दी सिनेमा में अंतर्निहित सामाजिक – सांस्कृतिक मूल्य – मदर इंडिया 1957, पूरब और पश्चिम 1970, हम आपके हैं कौन 1994, टॉयलेट : एक प्रेमकथा 2017

अनिवार्य पाठ :

- 'संस्कृति क्या है' (निबंध) संस्कृति, भाषा और राष्ट्र : रामधारी सिंह दिनकर, लोक भारती प्रकाशन, 2008, पृष्ठ संख्या 60–64
- साहित्य का उद्देश्य : प्रेमचंद (निबंध), एस.के. पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ संख्या 7–18
- भारतीय संस्कृति के स्वर : महादेवी वर्मा, राजपाल एंड संस प्रकाशन 2017
- हिंदी सिनेमा : भाषा, समाज और संस्कृति (लेख), पृष्ठ संख्या 11–18 भाषा साहित्य, समाज और संस्कृति खंड 6, प्रो. लालचंद राम, अक्षर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2020
- सिनेमा और साहित्य का अंतसंबंध : (लेख) पृष्ठ संख्या 30–34, साहित्य और सिनेमा, पुरूषोतम कुंदे (संपा.) साहित्य संस्थापन, 2014
- साहित्यिक रचनाओं का फिल्मांतरण : (लेख) पृष्ठ संख्या 206–212, लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, जवरीमल पारख, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि., 2019

सुझावात्मक पाठ :

- सिनेमा और संस्कृति : राही मासूम रजा, वाणी प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष, 2018
- जीवन को गढ़ती फिल्में : प्रयाग शुक्ल
- सिनेमा और संसार : उदयन वाजपेयी
- साहित्य, संस्कृति और समाज परिवर्तन की प्रक्रिया : अज्ञेय (निबंध), संपा. कृष्णदत्त पालीवाल, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ संख्या 25–41
- सिनेमा, समकालीन सिनेमा : अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, 2006
- कल्चर इंडस्ट्री रिकन्सिडर्ड : पृष्ठ संख्या 98–106 कल्चर इंडस्ट्री : थ्योडोरएडोर्नो, राउटलेज (भारतीय संस्करण)